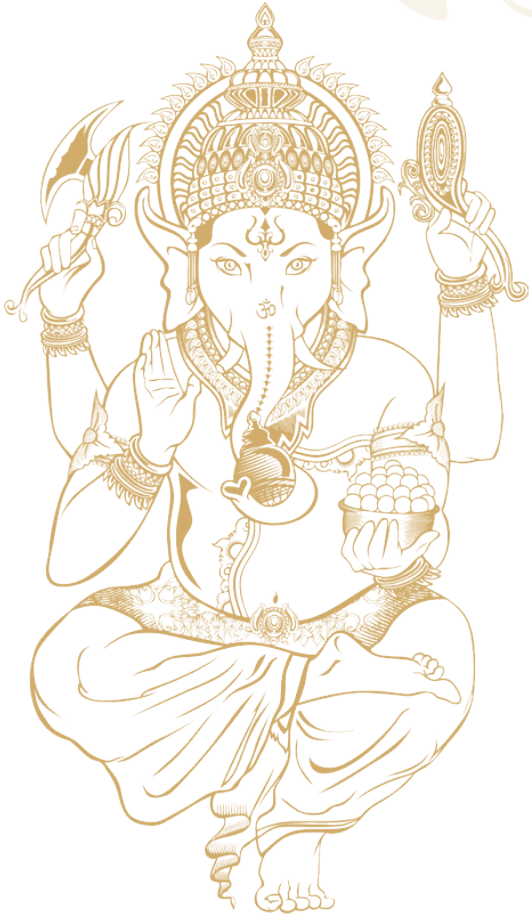

Mr.

12 Mar 2026

09:13 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121558301

तिथि 12/03/2026 **समय** 09:13:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	20:11:06 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:09:46 घं	योनि	श्वान
सूर्योदय	06:34:45 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	18:27:31 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मृग
मास	चैत्र	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	अग्नि
तिथि	9	जन्म नामाक्षर	यो-योगेश
नक्षत्र	मूल	पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
योग	सिद्धि	होरा	सूर्य
करण	तैतिल	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी		योगिनी	
केतु 4वर्ष 0मा 26दि		उल्का 3वर्ष 5मा 26दि	
केतु		उल्का	
12/03/2026		12/03/2026	
07/04/2030		07/09/2029	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		12/03/2026
	00/00/0000	संकटा	09/03/2027
	00/00/0000	मंगला	08/05/2027
	12/03/2026	पिंगला	07/09/2027
राहु	26/03/2027	धान्या	08/03/2028
गुरु	01/03/2028	भ्रामरी	06/11/2028
शनि	10/04/2029	भद्रिका	07/09/2029
बुध	07/04/2030		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:06:36	मेष	भरणी	3	शुक्र	राहु	---	0:00			
सूर्य			27:20:48	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.62	आत्मा	पितृ	वध
चंद्र			05:34:38	धनु	मूल	2	केतु	राहु	सम राशि	1.02	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	13:18:25	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	बुध	सम राशि	1.09	मातृ	भ्रातृ	साधक
बुध	व	अ	18:06:22	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	सम राशि	1.26	भ्रातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु			20:51:51	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.25	अमात्य	धन	वध
शुक्र			12:52:09	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	मंगल	उच्च राशि	1.11	पुत्र	कलत्र	मित्र
शनि		अ	08:51:11	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	0.83	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु			14:39:49	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु			14:39:49	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

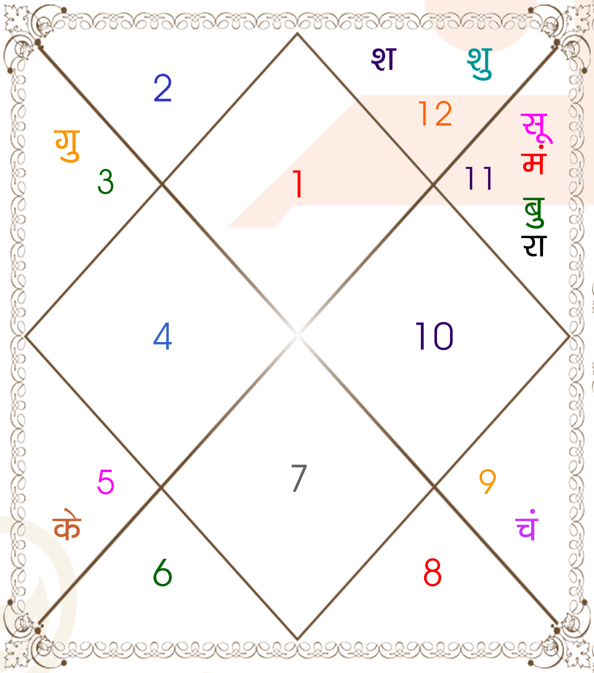

चन्द्र कुंडली

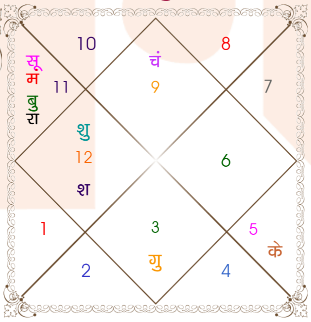

नवमांश कुंडली

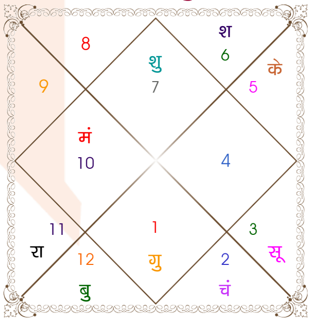

सर्वाष्टकवर्ग

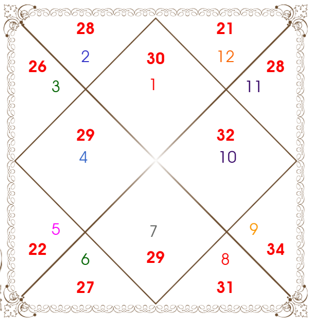

दशमांश कुंडली

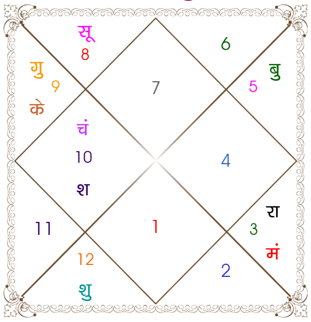

Pt Rupinder vashishth
Patel Nagar Yamunanagar
9466043536
rupendersharma1971@gmail.com

नक्षत्रफल

आप मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी आद्य, योनि श्वान, वर्ग मृग तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का पहला अक्षर "यो" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा, योगेश।

गण्डमूल नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने से जातक की माता को अरिष्ट होता है अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान से शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करने चाहिए तथा 27 दिन के बाद पुनः जब यह नक्षत्र आए तो इस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक शान्ति करने से इसका दोष प्रायः समाप्त हो जाएगा तथा सम्बंधित जातक सुखपूर्वक रहेगा।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश्
मानसागरी

आप एक सौभाग्य शाली पुरूष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों का सुखपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही धन वैभव से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनवान व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। आप जीवन में वाहन सुख भी प्राप्त करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य से आप उत्तम रहेंगे तथा चंचलता की प्रवृति का आपमें अभाव रहेगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। शास्त्र ज्ञान में भी आपकी रूचि रहेगी तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन जीवन में यदा कदा आपको वायुजनित रोगों से व्याकुलता की भी अनुभूति होगी तथा इससे आप पीड़ित रहेंगे।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आप बोलने में अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे तथा अपनी इस कला से अपने अधिकाँश कार्यो से सफलता प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य लोगों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप बिना किसी ठोस प्रमाण के अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे जिससे लोग आपकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं देंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।

Pt Rupinder vashishth
Patel Nagar Yamunanagar
9466043536
rupendersharma1971@gmail.com

जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आपका जीवन में धन ऐश्वर्य तथा सम्मान से परिपूर्ण रहेंगे। आपकी कार्य शैली स्थिरता के गुण से युक्त रहेगी तथा अन्य प्रकार की सम्पत्तियों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्‌गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका मुख तथा कंठावृति दीर्घ रहेगी। साथ ही आपके कान ओंठ एवं दांतों में भी स्थूलता दृष्टिगोचर होगी। आपकी भुजाएं भी पूर्ण रूपेण मांसल होकर स्थूल रहेंगी। पिता से प्राप्त धन का आप जीवन में सुखपूर्वक उपयोग करेंगे। आपके मन में दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी। फलतः जरूरत मन्द लोगों को आप समयानुसार यथा शक्ति दान देते रहेंगे। लेखन कार्य की ओर भी आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आप शारीरिक शक्ति से पूर्ण सक्षम रहेंगे। जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में आप निपुण रहेंगे तथा अपने भाषणों से लोगों को प्रभावित करके प्रसन्न रखेंगे। आप विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में भी दक्ष रहेंगे। चित्रकारी आपका शौक रहेगा तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। गम्भीरता से कार्यो को करना आपकी प्रवृति रहेगी। आपकी धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इसके विषय में ज्ञान भी प्रर्याप्त मात्रा में रहेगा। वन्धु वर्ग में आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको प्रेम तथा सम्मान एवं सौहार्द से

ही वश में किया जा सकेगा। बल पूर्वक आप कुछ भी करने को तैयार नहीं होंगे। साथ ही वातजनित रोगों से भी आप यदा कदा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखें वृताकार होंगी तथा हाथ भी लम्बे रहेंगे। साथ ही सीना भी पूर्ण रूप से विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव की मात्रा बढ सकती है। आप जल के समीप निवास करना पसन्द करेंगे। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी तथा कठिन से कठिन विषय के ज्ञान को धारण करने में आप सफल रहेंगे। आप हृदय से हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपके शरीर की अस्थियां भी पुष्ट रहेंगी।कृतज्ञता के गुण से आप युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोऽस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आपको निष्क्रिय होकर बैठना अच्छा नहीं लगेगा अतः किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके वाक्चातुर्य से सभी प्रभावित रहेंगे तथा हृदय से सम्मान करेंगे। त्याग की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेगा तथा अपने अधिकाँश कार्यों को साहस पूर्ण सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित एवं भयभीत रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोगों के मध्य आप प्रिय तथा आदरणीय रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुर्नृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार के कार्य तथा कलाओं में दक्षता प्राप्त करेंगे। सदाचारी जीवन यापन करने में आप पूर्ण रूपेण यत्नशील रहेंगे। आपकी प्रवृति हमेशा स्पष्ट बोलने की रहेगी तथा अपने विचारों को उन्भुक्त भाव से अन्य जनों के समक्ष स्पष्ट करेंगे। साथ ही आप अपनी आय के अनुसार ही सोच विचार कर व्यय करेंगे तथा अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।

Pt Rupinder vashishth
Patel Nagar Yamunanagar
9466043536
rupendersharma1971@gmail.com

जातकाभरणम्

आपके समस्त शरीर के अंग सुन्दर एवं सुगठित रहेंगे। साथ ही अपने परिवार या कुल में श्रेष्ठ तथा सम्मानीय रहेंगे। इंजीनियरी या चित्रकला के क्षेत्र में आप जीवन में विशेष सफलता अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप में वीरता का गुण स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा। आप एक सत्यवादी व्यक्ति होंगे तथा आजीवन सत्य के अनुपालन करने के लिए प्रयत्न शील रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी एवं चंचलता का इसमें अभाव रहेगा अतः आपके समस्त कार्य दृढता पूर्वक सम्पन्न होंगे। सत्वगुण से भी आप सुप्रसन्न रहेंगे तथा आपके हृदय में अन्य लोगों के प्रति द्वेष की भावना नहीं रहेगी। अपितु सब के प्रति स्नेह का भाव ही विद्यमान रहेगा। आपका स्वरूप देखने में सुन्दरता से युक्त रहेगा तथा आपको गुणवती तथा बुद्धिमती स्त्री की प्राप्ति होगी। जिससे गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। शरीर से आप स्थूल होंगे तथा कभी कभी आप ऐसा कार्य करेंगे। जिससे समस्त कुल या परिवार को परेशानी या चिन्ता की अनुभूति करनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त समाज के सभी वर्गो में आपकी लोकप्रियता भी रहेगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा समाज में श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र समझे जाएंगे। साथ ही आप अपने भाईयों में भी उत्तम होंगे। आपकी प्रवृति भी धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा देवता, ब्राहमण एवं गुरूओं के प्रति आपके मन पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रहेगा तथा समयानुसार आप इनकी पूजा एवं सेवा कर्म में तत्पर रहेंगे। चलने में आपकी गति दर्शनीय रहेगी। परन्तु सहन शक्ति का आप में प्रायः अभाव ही दृष्टि गोचर होगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव अधिक तथा व्यर्थ बोलने वाला होगा। आपका हृदय भी कठोरता के भाव से अधिक युक्त रहेगा एवं करूणा की न्यूनता रहेगी परन्तु आप एक निर्भय तथा साहसी व्यक्ति होंगे। अतः निर्भयता पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आप में उग्रता की भी प्रबलता रहेगी अतः

प्रायः छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित होकर इसका प्रदर्शन करेंगे। अपने कार्य सिद्धि के लिए कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके अन्दर शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा तथा अन्य जनों से यदा कदा परस्पर विवाद होता रहेगा।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह आदि रोगों से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक रहेगा तथा वाणी में भी कभी कभी कठोरता का भाव विद्यमान होगा। जो श्रोता को अच्छा नहीं लगेगा। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में उत्पन्न होने के कारण आप उत्साह पूर्वक सर्वदा अपने कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। फलतः अधिकाँश कार्यों में सकारात्मक फलों की प्राप्ति होगी। आप साहस तथा निर्भयता से युक्त होकर समस्त सांसारिक समस्याओं का सामना करेंगे। तथा उनके निराकरण में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे। बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही माता पिता के प्रति आपके मन में निःस्वार्थ श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा तथा इसी भाव से आप हमेशा उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरे से सहमत ही रहेंगे।

Pt Rupinder vashishth
Patel Nagar Yamunanagar
9466043536
rupendersharma1971@gmail.com

इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीय अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल प्रदान करने वाले रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों भरणी नक्षत्र, वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो, मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य कार्यों में सिद्धि नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए एवं मंगलवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही

Pt Rupinder vashishth
Patel Nagar Yamunanagar
9466043536
rupendersharma1971@gmail.com

सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीतपुष्प, चने की दाल, हल्दी आदि, पदार्थो का श्रद्धा पूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप कराने चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल कम होंगे तथा अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

Pt Rupinder vashishth
Patel Nagar Yamunanagar
9466043536
rupendersharma1971@gmail.com